گھر ويٺي سنڌي سکڻ

جو

سولو ڪتاب

(सिंधी खुद मास्टर)

Price Rs. 15.00

قيمت : روپيه ۱۵-۰۰

آڪٽوبر ۱۹۹۸ چوٿون ڇاپو (سڌاريل) ۱۰۰۰ ڪاپيون

چيلارام ڪياٽي
(A.M.I.E. (Civil) (ڊپلوما)

گھر ويٺي سنڌي سکڻ

جو

سَوِلو ڪتاب

(सिंधी खुद मास्टर)

Price Rs. 15.00

قيمت : روپيه ١٥-٠٠

آڪتوبر ١٩٩٨ چوٿون ڇاپو (سڌاريل) ١٠٠٠ ڪاپيون

چيلارام کياڻي

(ڊپلوما (A.M.I.E. (Civil)

ٻه اکر

١. هي هنديءَ الفابيٽ رستي سنڌي سکڻ لاءِ سولو ڪتاب آهي. ماترائن جو بار بار اڀياس ڪرڻ سان ڪتاب سولو پڙهي سگهبو.
٢. راڄيه سرڪار طرفان طئه ٿيل ٻئين ڪان پنڃين درجي تائين ڪتابن جو ٻه اڀياس ڪرڻ گ هرجي. پهرين ٢٠ ڏينهن ۾ سنڌي لکڻ پڙهڻ سمجهه ۾ اچي ويندو ۽ ڇهه مهينا سنڌي ڪتابن جو اڀياس ڪرڻ سان ڇئي سگهبو ته سنڌي لکڻ پڙهڻ اچي ٿو.
٣. سنڌي اکر وڏا ۽ پري پري لکڻ جو اڀياس ڪرڻ سان لکٽي سهڻي ۽ وٽندڙ لڳندي.
٤. بندگي ڪرڻ، دان پڇ ڪرڻ، ڌرمشالائون مندر ۽ اسڪول نهرائڻ ۽ ٻيا شيوا جا ڪاريه ڪرڻ سنا آهن پر جاتيءَ جا ٻانهن ٻيلي ٿيڻ لاءِ ماترڀاشا سان پيار رکڻ، ماترڀاشا لکڻ پڙهڻ ۽ سنڌي سنتن ۽ ساهتڪارن جا سنڌي ڪتاب پڙهڻ وڏيڪ ضروري آهي.
٥. بيت ياد ڪرڻ سان من کي راحت ملندي.

اُميد ته هي ننڍو ڪتاب سنڌي ٻولي سکڻ ۾ ڪي قدر ڪمائتو ٿيندو.

ڊسمبر ١٩٩٥ — ٥٠٠ ڪاپيون — چيلارام ڪياٽي

ٻيو ڇاپو مارچ ١٩٩٦ — ٥٠٠ ڪاپيون

ٽيون ڇاپو آڪٽوبر ١٩٩٦ — ١٠٠٠ ڪاپيون

چوٿون ڇاپو (سڌاريل)

١. هن ڇاپي ۾ اکر سڃاڻڻ لاءِ مورتون ۽ ماترائون هجي ڪري سمجهڻ جو طريقو هنديءَ ۾ ڏنل آهي. جيئن وڏا ٻار ۽ بالغ گهر ويٺي سنڌي لکي پڙهي سگهن. انڪري شام جا ڪلاس پري هئڻ ۽ وقت جي اڻسهوليت جون دقتون نه رهنديون پاڻ پڙهي پنهنجن ٻارن کي ٻه پاڻ سنڌي سيکاريو.
٢. پنهنجو وجود ۽ سڃاڻپ قائم رکڻ لاءِ سنڌي لپي (عربي) سکڻ ضروري آهي. ان طرح اسان هند سنڌ ۽ دنيا جي سنڌين سان جڙي سگهنداسون. ايڪتا ۽ قرب پيدا ٿيندو ۽ سنڌي وشال ساهتيه جي ٻه چونڊ پنهنجي پسنديءَ موجب ڪري سگهبي. اسان نصيبدار آهيون جو عربي لپيءَ جو مان مرتبو دنيا جي گهڻن ملڪن ۾ آهي ۽ ڀارت ۾ پڻ عربي لپيءَ کي ۽ گهڻن پرانتن ۾ چڱو مان مرتبو آهي. انڪري اُردو پرشن ۽ ٻين عربي لپيءَ جي ٻولين ۾ چٽاڀيٽي ۽ سيمينارن ۾ حصو وٺي سگهبو.
٣. ٥٢ اکرن جون ماترائون هجي ڪرڻ جو طريقو هڪ جهڙو هئڻ ڪري ماترائون جلد برزبان ٿين ٿيون ۽ هجي ڪري لکڻ سولو ٿئي ٿو ۽ ماترائون سمجهڻ ۾ پورو وشواس ٿئي ٿو. ماترائون ئي ٻوليءَ جو بنياد آهن، جي هن ڪتاب ۾ جڳي طرح سمجهايل آهن. انڪري سبق ١١، ١٢ ۽ ١٣ سمجهڻ ضروري آهن.
٥. نون غني جا اکر ماترائن سان گڏ ڪيئن لکجن انلاءِ ٻه هڪ سبق ڏنل آهي.

آڪٽوبر ١٩٩٨ — چيلارام ڪياٽي

گهر ويٺي سنڌي سکڻ جو سَوِلو ڪتاب (सिंधी खुद मास्टर)

: چيلارام کياڻي

ڪاپيون : ۱۰۰۰   سال : آڪٽوبر ۱۹۹۸   چوٿون ڇاپو (سڌاريل)

قيمت : روپيا ۱۵.۰۰

پبلشر : سنڌي ادبي سرڪل

چيلارام کياڻي، گانڌيڌام - ۳۷۰۲۰۱. فون نمبر : ۲۱۶۱۲

ڇپيندڙ : شري سائِناٿ آفسيٽ، گانڌيڌام. فون : ۲۳۶۰۰، ۳۶۸۰۹

Ghar Vethe Sindhi Sikhana Jo Savilo Kitabu (Sindhi Khud Master)

: Chellaram Khiani

Copies : 1000   Year : October 1998   Fourth Edition (Revised)

Price : Rs. 15.00

Publisher : Sindhi Adabi Circle
Chellaram Khiani Ph. : 21612
C-20, NU 10-B,
Bhai Pratap Nagar,
Gandhidham (Kutch) 370 201.

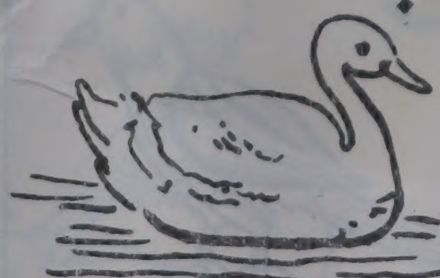
Printer : Shree Sainath Offset
Gandhidham. Ph. : 23600, 36809

ا



الف - اَنبُ
अलफ - अंबु

ب



بي - بَدَڪ
बे - बदक

ٻ



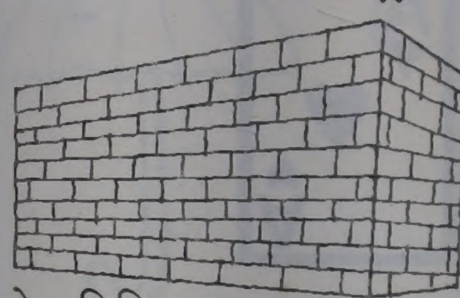
ٻي - ٻَڪِرِي
ॿे - ॿकरी

پ



پي - پَنُ
पे - पनु

ڀ



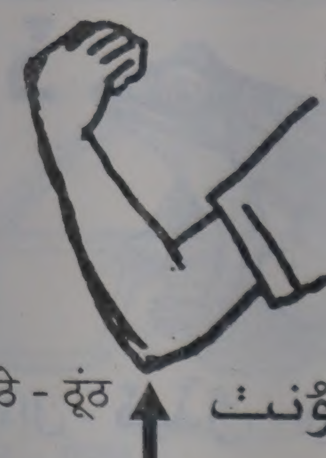
ڀي - ڀِتِ
भे - भिति

ت



تي - تارو
ते - तारो

ٺ



ٺي - ٺُونٺ
ठे - ठूंठ

ٽ



ٽي - ٽماٽو
टे - टमाटो

ث



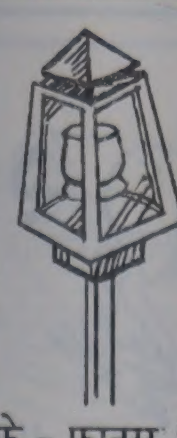
ثي - ثَوابُ
से - सवाबु

ٿ



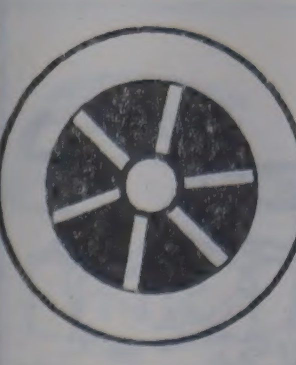
ٿي - ٿَنڀُ
थे - थंभु

ف



في - فانوُس
फ़े - फ़ानूस

ڦ



ڦي - ڦِيٿو
फे - फीथो

فهرست

ج



جِيم - جَتُ

जीम - जतु

ڄ



ڄي - ڄِڀَ

ॼे - ॼिभ

ڃ



ڃي - پِڃرو

ञे - पिञरो

چ



چي - چَنڊُ

चे - चंड

ڇ



ڇي - ڇَٽِي

छे - छट्टी

خ



خاءِ - خَچَرُ

ख़ाइ - ख़चरु

ع



عَين - عَينَڪَ

ऐन - ऐनक

غ



غَين - غاليچو

ग़ैन - गालिचो

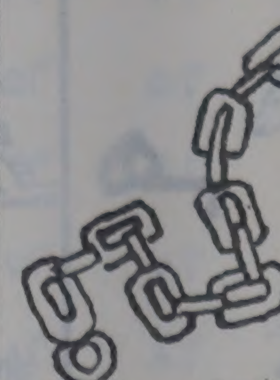
ر



ري - رِڇُ

रे - रिछु

ز



زي - زَنجِير

ज़े - ज़ंजीर

ڙ



ڙي - ماڙِي

ड़े - माड़ी

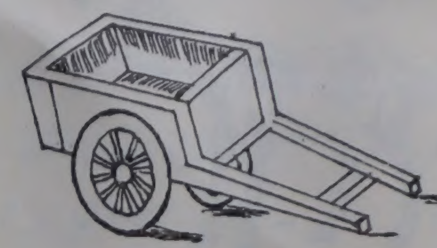
م



مِيم - مَسُ

मीम - मसु

گ



گاف - گاڏو
गाफ - गाडो

ڳ



ڳي - ڳيرو
ग॒े - ग॒ेरो

ڱ



ڱي - سڱُ
ङे - सिङु

ک



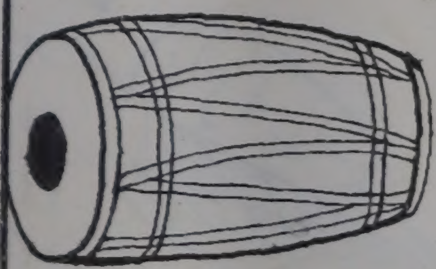
کي - کٽَ
खे - खट

ي



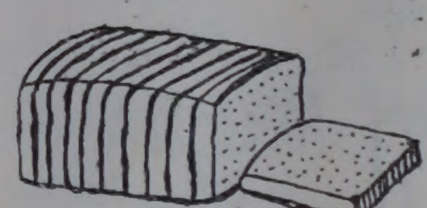
يي - يڪو
ये - यको

د



دال - دُهِلُ
दाल - दुहिल

ذ



ذال - ذَرو
ज़ाल - ज़रो

ڌ



ڌال - ڌوٻِي
धाल - धोबी

ڏ



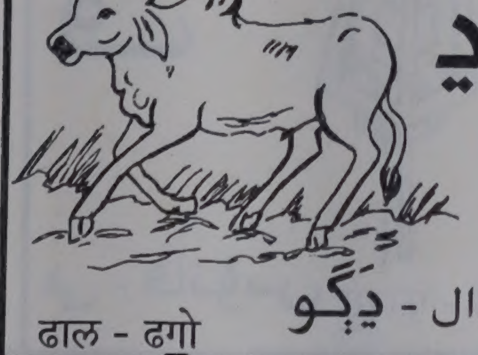
ڏال - ڏيڏَرُ
द॒ाल - द॒ेद॒रु

ڊ



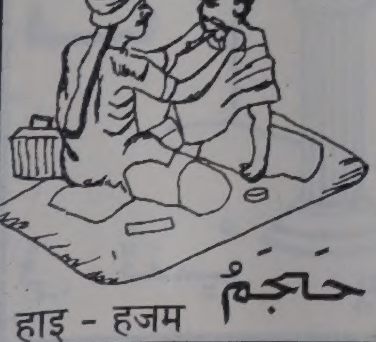
ڊال - ڊيل
डाल - डेल

ڍ



ڍال - ڍڳو
ढाल - ढगो

ح



حاءِ - حَجَمُ
हाइ - हजम

جھ  झे - झिरकी جهي جهِرڪِي	گھ  घे - घोड़ो گهي - گهوڙو	ڪ  काफ - कुतो ڪاف - ڪُتو
۽  हमज़ो - कांउ همزو - ڪانءُ		شري ڪنيالال ايسراڻي (سنڪلپ اسٽڊيو)

انگ

۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۱۰
۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹	۲۰
۲۱	۲۲	۲۳	۲۴	۲۵	۲۶	۲۷	۲۸	۲۹	۳۰
۳۱	۳۲	۳۳	۳۴	۳۵	۳۶	۳۷	۳۸	۳۹	۴۰
۴۱	۴۲	۴۳	۴۴	۴۵	۴۶	۴۷	۴۸	۴۹	۵۰
۵۱	۵۲	۵۳	۵۴	۵۵	۵۶	۵۷	۵۸	۵۹	۶۰
۶۱	۶۲	۶۳	۶۴	۶۵	۶۶	۶۷	۶۸	۶۹	۷۰
۷۱	۷۲	۷۳	۷۴	۷۵	۷۶	۷۷	۷۸	۷۹	۸۰
۸۱	۸۲	۸۳	۸۴	۸۵	۸۶	۸۷	۸۸	۸۹	۹۰
۹۱	۹۲	۹۳	۹۴	۹۵	۹۶	۹۷	۹۸	۹۹	۱۰۰

ن



नून - नथ

نوُن - نَٿَ

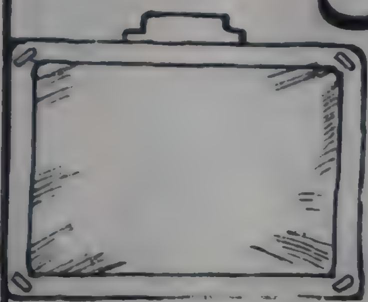
ل



लाम - लकुणु

لام - لَڪُڻُ

س



सीन - सिलेट

سِين - سِليٽَ

ش



शीन - शीशी

شِين - شِيشِي

و



वावु - वाढो

واوُ - واڍو

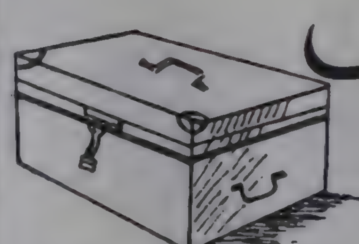
ق



काफ - कलम

قاف - قَلَمُ

ص



सुवाद - संदूक

صواد صندوُقَ

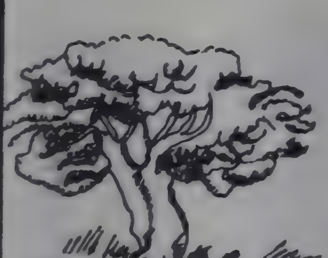
ض



ज़ुवाद - ज़ईफ

ضواد-ضعِيف

ڻ



णे/णूणु - वणु

ڻي /ڻوُڻ - وڻ

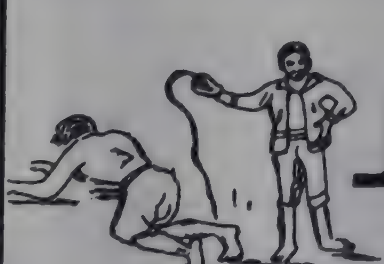
ط



तुए - तोतो

طُئِي - طوطو

ظ



ज़ुए - ज़ालिम

ظُئِي - ظالِمُ

ھ



हे - हरणी

ھي - ھرڻِي

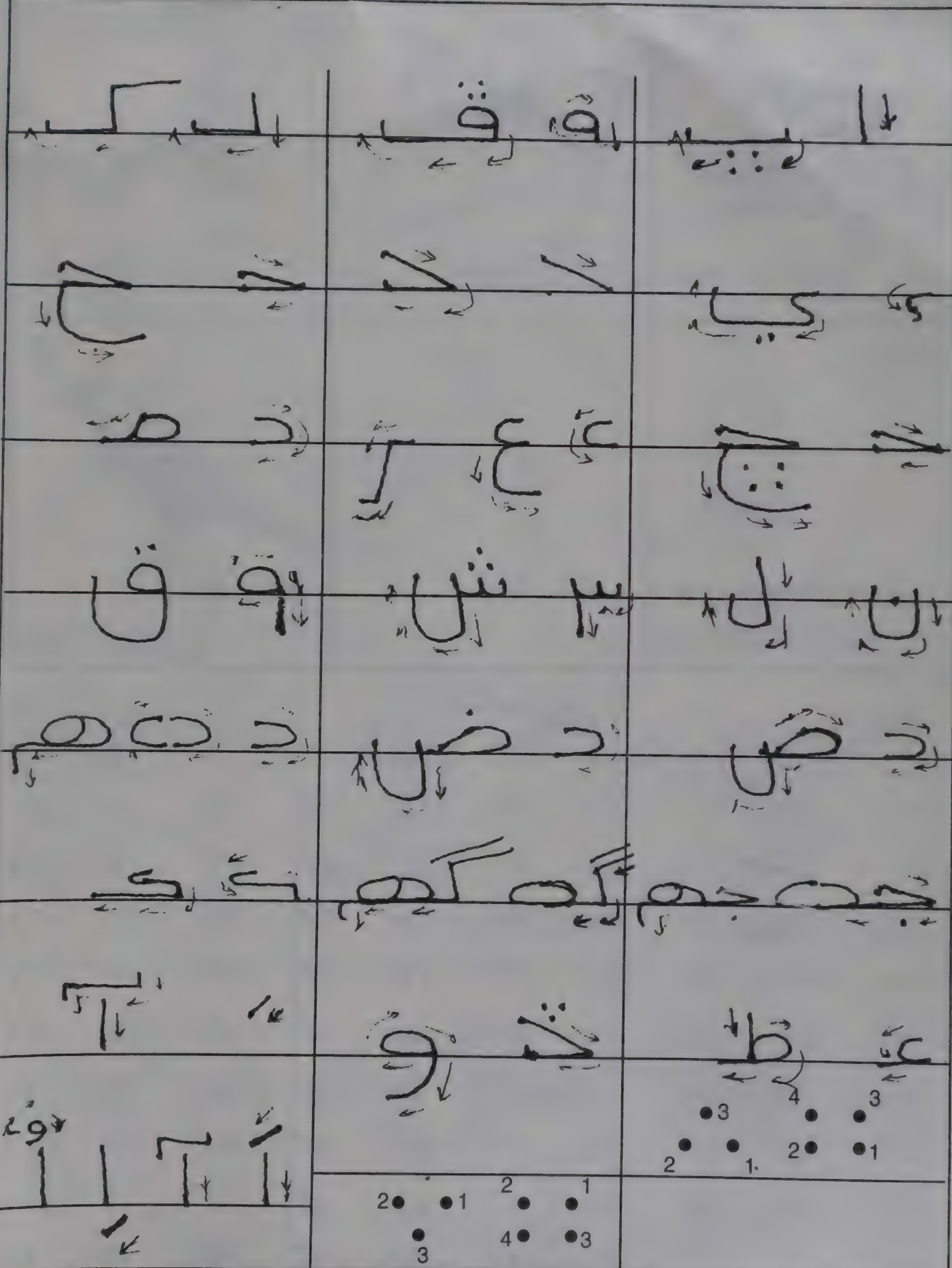
سبق - ٣ سنڌي ٥٢ اکر ۽ ٤٢ اُچار

ت	ڀ	پ	ٻ	ب	ا
ते	भे	पे	बे	बे	अलफ
ڦ	ف	ٿ	ث	ٽ	ٺ
फे	फ़े	थे	से	टे	ठे
د	ي	ک	ڱ	ڳ	گ
दाल	ये	खे	ङे	गे	गाफ
ح	ڍ	ڊ	ڏ	ڌ	ذ
हाए	ढाल	डाल	दाल	धाल	ज़ाल
خ	ڇ	چ	ڃ	ڄ	ج
ख़ाए	छे	चे	ञे	जे	जीम
م	ڙ	ز	ر	غ	ع
मीम	ड़े	ज़े	रे	ग़ैन	ऐन
ق	و	ش	س	ل	ن
क़ाफ	वाव	शीन	सीन	लाम	नून
ه	ظ	ط	ڻ	ض	ص
हे	ज़ुऐ	तुऐ	णूण	ज़ुवाद	सुवाद
		ء	ڪ	گھ	جھ
		हमज़ो	काफ	घे	झे

लिखने का ढंग

दांये से बायें तरफ लिखने का अभ्यास करें

سبق - ٢ اکر لکڻ جو ڍنگ ساڄي کان لکو.



سبق - ۵ اکر جوڙڻ جوُن صورتوُن

टे	ठे	ते	भे	पे	ॿे	बे	उच्चारण
ٽ	ٺ	ت	ڀ	پ	ٻ	ب	अक्षर
ٽـ	ٺـ	تـ	ڀـ	پـ	ٻـ	بـ	शुरु
ـٽـ	ـٺـ	ـتـ	ـڀـ	ـپـ	ـٻـ	ـبـ	मध्य
ـٽ	ـٺ	ـت	ـڀ	ـپ	ـٻ	ـب	अंतिम

ङे	ॻे	गाफ	फे	फ़े	थे	से	उच्चारण
ڱ	ڳ	گ	ڦ	ف	ٿ	ث	अक्षर
ڱـ	ڳـ	گـ	ڦـ	فـ	ٿـ	ثـ	शुरु
ـڱـ	ـڳـ	ـگـ	ـڦـ	ـفـ	ـٿـ	ـثـ	मध्य
ـڱ	ـڳ	ـگ	ـڦ	ـف	ـٿ	ـث	अंतिम

काफ	घे	झे	हे	मीम	हमज़ो	खे	उच्चारण
ڪ	گھ	جھ	ھ	م	ء	ک	अक्षर
ڪـ	گھـ	جھـ	ھـ	مـ	ئـ	کـ	शुरु
ـڪـ	ـگھـ	ـجھـ	ـھـ	ـمـ	ـئـ	ـکـ	मध्य
ـڪ	ـگھ	ـجھ	ـھ	ـم	ـئ	ـک	अंतिम

२ - छे उच्चारों के दूसरे १० अक्षर

سبق - ۴ ڇهن اُچارن جا ٻيا ۱۰ اکر

क - ३	ह - २	त - १	गुणात्मक उच्चार
ق = ک	ح = ھ	ط = ت	
क़ाफ़ काफ़	हाऐ हे	तुऐ ते	

ज़ - ५	स - ४	गुणात्मक उच्चार
ظ ض ذ = ز	ص ث = س	
जुऐ ज़ुवाद ज़ाल ज़े	सुवाद से सीन	

अ - ६	गुणात्मक उच्चार
ع ء = ا	
ऐन हमज़ो अलफ	

---

१. सिंधी वर्णमाला के ५२ अक्षरों के लिखने का ढंग - २० अक्षर हैं इसलिये सिंधी भाषा लिखने में सरल हैं अक्षर पहचानने में समय लगता हैं । मूल अक्षर / आकार

ڄ	ڏ	ي	ڳ	ڦ	ٻ	ا
و	ش	ل	ن	م	ڙ	غ
	ک	جھ	ھ	ظ	ص	ق

२ - विशेष अक्षर

आउं	में	ऐं	ढ़
آءٌ / آءُ	مِ	ءِ	ڙھ

سبق - ٦ زبر جا اُچار

अक्षर के ऊपर छोटी तिरछी लकीर (َ) को ज़बर कहते हैं (जबरदस्त) और अ मात्रा के स्वर बनते हैं हिजे/ उच्चारण करने का तरीका जैसे :- अलफ ज़बर अ = اَ , बे ज़बर = बَ بَ उंचे आवाज़ से हिजे कर के पढे व लिखे

त	भ	प	ब॒	ब	अ
تَ	ڀَ	پَ	ٻَ	بَ	اَ
फ	फ़	थ	स	ट	ठ
ڦَ	فَ	ٿَ	ثَ	ٽَ	ٺَ
द	य	ख	ङ	ग॒	ग
دَ	يَ	کَ	ڱَ	ڳَ	گَ
ह	ढ	ड	द॒	ध	ज़
حَ	ڍَ	ڊَ	ڏَ	ڌَ	ذَ
ख़	छ	च	ञ	ज॒	ज
خَ	ڇَ	چَ	ڃَ	ڄَ	جَ
म	ड़	ज़	र	ग़	अ
مَ	ڙَ	زَ	رَ	غَ	عَ
क	व	श	स	ल	न
قَ	وَ	شَ	سَ	لَ	نَ
ह	ज़	त	ण	ज़	स
هَ	ظَ	طَ	ڻَ	ضَ	صَ
		अ	क	घ	झ
		ءَ	ڪَ	گھَ	جھَ

(२) निम्न ११ प्रकार के अक्षर दायें तरफ से तो जुड़ते हैं पर बायें तरफ से अलग हो जाते है इसलिये ये अक्षर मध्य व अंतिम एक जैसे हैं

वावु	ड़े	ज़े	रे	ढाल	डाल	द़ाल	धाल	ज़ाल	दाल	अलफ	उच्चारण
و	ڑ	ز	ر	ڍ	ڊ	ڏ	ڌ	ذ	د	ا	शुरु
ـو	ـڑ	ـز	ـر	ـڍ	ـڊ	ـڏ	ـڌ	ـذ	ـد	ـا	मध्य (अंतिम)

(३) अक्षर को पक्ष में C यू-आकार के अक्षर हैं उनके लिखने का ढंग

गै़न	अैन	ख़ाअे	छे	चे	ञे	जे	जीम	ख़ाअे	हाअे	उच्चारण
غ	ع	خ	ڇ	چ	ڃ	ڄ	ج	خ	ح	अक्षर
غـ	عـ	خـ	ڇـ	چـ	ڃـ	ڄـ	جـ	خـ	حـ	शुरु
ـغـ	ـعـ	ـخـ	ـڇـ	ـچـ	ـڃـ	ـڄـ	ـجـ	ـخـ	ـحـ	मध्य
ـغ	ـع	ـخ	ـڇ	ـچ	ـڃ	ـڄ	ـج	ـخ	ـح	अंतिम

(४) अक्षर में यू U आकार के ९ अक्षर हैं उनके मिलाने का ढंग

णूण	जुवाद	सुवाद	काफ	शीन	सीन	लाभ	नून	ये	उच्चारण
ڻ	ض	ص	ق	ش	س	ل	ن	ي	अक्षर
ڻـ	ضـ	صـ	قـ	شـ	سـ	لـ	نـ	يـ	शुरु
ـڻـ	ـضـ	ـصـ	ـقـ	ـشـ	ـسـ	ـلـ	ـنـ	ـيـ	मध्य
ـڻ	ـض	ـص	ـق	ـش	ـس	ـل	ـن	ـي	अंतिम

سبق - ۷ زبر وارا اَکرَ

पन	कन	अन	नक	अक
پَنَ	کَنَ	اَنَ	نَکَ	اَکَ
खट	मट	नथ	वट	थफ
کَٹَ	مَٹَ	نَٿَ	وَٹَ	ٿَفَ
ख़त	चप	ज़्ज	जत	डप
خَطَ	چَپَ	جَجَ	جَتَ	ڈَپَ
छट	छ़ज़ु	हज	हथ	दर
چَٹَ	چَجَ	حَجَ	ھَٿَ	دَرَ
हर	वण	वट	ज़र	घर
ھَرَ	وَڻَ	وَٹَ	زَرَ	گھَرَ
लप	ग़ल	ढल	झल	ढक
لَپَ	گَلَ	ڊَلَ	جھَلَ	ڊَکَ
गप	सत	नस	यम	हजम
گَپَ	سَتَ	نَسَ	یَمَ	حَجَمَ
ग़म	बघ	कलम	लग़ड़	बकर
غَمَ	بَگھَ	قَلَمَ	لَغَڑَ	بَکَرَ

'अ' मात्रा के उचार और पढने का तरीका

زبر جا اُچار

اَ	अलफु ज़बर - अ
بَ	बे ज़बर - ब
ٻَ	बे ज़बर - ब
پَ	पे ज़बर - प
ڀَ	भे ज़बर - भ
تَ	ते ज़बर - त
ٺَ	ठे ज़बर - ठ
ٽَ	टे ज़बर - ट
ثَ	से ज़बर - स
ٿَ	थे ज़बर - थ
فَ	फ़े ज़बर - फ़
ڦَ	फे ज़बर - फ
گَ	गाफु ज़बर - ग
ڳَ	गे ज़बर - ग
ڱَ	ङे ज़बर - ङ
کَ	खे ज़बर - ख
يَ	ये ज़बर - य
دَ	दालु ज़बर - द

ذَ	ज़ालु ज़बर - ज़
ڌَ	धालु ज़बर - ध
ڏَ	दालु ज़बर - द
ڊَ	डालु ज़बर - ड
ڍَ	ढालु ज़बर - ढ
حَ	हाय ज़बर - ह
جَ	जीमु ज़बर - ज
ڄَ	जे ज़बर - ज
ڃَ	ञे ज़बर - ञ
چَ	चे ज़बर - च
ڇَ	छे ज़बर - छ
خَ	खाए ज़बर - ख़
عَ	ऐनु ज़बर - अ
غَ	ग़ैनु ज़बर - ग़
رَ	रे ज़बर - र
زَ	ज़े ज़बर - ज़
ڙَ	ड़े ज़बर - ड़
مَ	मीमु ज़बर - म

نَ	नूनु ज़बर - न
لَ	लामु ज़बर - ल
سَ	सीनु ज़बर - स
شَ	शीनु ज़बर - श
وَ	वावु ज़बर - व
قَ	क़ाफु ज़बर - क़
صَ	सुवादु ज़बर - स
ضَ	ज़ुवादु ज़बर - ज़
ڻَ	णे ज़बर - ण
طَ	तुए ज़बर - त
ظَ	ज़ुए ज़बर - ज़
هَ	हे ज़बर - ह
جهَ	झे ज़बर - झ
گهَ	घे ज़बर - घ
ڪَ	काफु ज़बर - क
ءَ	हमज़ो ज़बर - अ

سبق - ۹ آ جا آواز

६-आ-मात्रा के स्वर हिजे कर के पढ़ें व लिखें ।

अलफ के ऊपर मंदु (~) बाकी अक्षरों के साथ अलफ (ا) देने से आ की मात्रा के स्वर बनते हैं हिजे करने का तरीका : अलफ मंदु - आ = آ , बे अलफ - बा = با , ॿे अलफ - ॿा = ٻا , पे अलफ - पा = پا ,

ता	भा	पा	ॿा	बा	आ
تا	ڀا	پا	ٻا	با	آ
ڦا	فا	ٿا	ثا	ٽا	ٺا
دا	يا	کا	ڱا	ڳا	گا
حا	ڍا	ڊا	ڏا	ڌا	ذا
خا	ڇا	چا	ڃا	ڄا	جا
ما	ڙا	زا	را	غا	عا
قا	وا	شا	سا	لا	نا
ھا	ظا	طا	ڻا	ضا	صا
		ئا	ڪا	گھا	جھا

सिंधी ५२ अक्षर व ४२ उच्चार
(हिन्दी वर्णमाला के अनूसार)

سبق ٨ - سِنڌي ٥٢ اکر ۽ ٤٢ اُچار

١

ڪَ قَ	کَ	گَ	گھَ	ڱَ
क	ख	ग	घ	ङ
خَ	غَ	ڳَ		
ख़	ग़	ग॒		

٢

چَ	ڇَ	جَ	جھَ	ڃَ	ڄَ
च	छ	ज	झ	ञ	ज॒
زَ ذَ ضَ ظَ					
ज़					

٣

ٽَ	ٺَ	ڊَ	ڍَ	ڻَ	ڙَ
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़

٤

تَ طَ	ٿَ	دَ	ڌَ	نَ	ڏَ
त	थ	द	ध	न	द॒

٥

پَ	ڦَ	بَ	ڀَ	مَ	فَ	ٻَ
प	फ	ब	भ	म	फ़	ब॒

٦

يَ	رَ	لَ	وَ	شَ
य	र	ल	व	ष, श

٧

سَ ثَ صَ	هَ حَ	اَ عَ ۽
स	ह	अ

१०-अि के स्वर हिजे कर के पढ़ें व लिखें ।

سبق—۱۰— زير جا آواز

अक्षर के नीचे छोटी तिरछी लकीर (ِ) देने को ज़ेर कहते हैं (ज़ेरदस्त) और इ मात्रा के स्वर बनते हैं हिजे/ उच्चारण करने का तरीका अलफ ज़ेर - अि = اِ , बे ज़ेर - बि = بِ , बे ज़ेर - ब़ि = ٻِ

अि	बि	ब़ि	पि	भि	ति
اِ	بِ	ٻِ	پِ	ڀِ	تِ
ٺِ	ٽِ	ثِ	ٿِ	فِ	ڦِ
گِ	ڳِ	ڱِ	کِ	يِ	دِ
ذِ	ڌِ	ڏِ	ڊِ	ڍِ	حِ
جِ	ڄِ	ڃِ	چِ	ڇِ	خِ
عِ	غِ	رِ	زِ	ڙِ	مِ
نِ	لِ	سِ	شِ	وِ	قِ
صِ	ضِ	ڻِ	طِ	ظِ	ھِ
جھِ	گھِ	ڪِ	ءِ		

ڈَگا	جارا	چاچا	کاکا	دادا	بابا
ढगा	ज़ारा	चाचा	काका	दादा	बाबा
نانا	ماتا	چالا	گابا	کارا	واڈا
नाना	माता	छाला	गाबा	खारा	वाढा
تارا	مالا	پاپا	کاوا	راذا	آشا
तारा	माला	पापा	कावा	राधा	आशा
شالَ	قارَ	آنا	تالھَ	ٹاٹا	ذاٹا
शाल	फार	आना	थालह	टाटा	धाणा
عادَت	باغَ	ھاک	نالا	ساوا	ماما
आदत	बाग़	हाक	नाला	सावा	मामा

سبق - ١١ الف بي جا آواز هجي ڪري پڙهو ۽ لکو.

१. ज़बर - (َ) छोटी तिरछी लकीर अक्षर के ऊपर देने को ज़बर कहते है (ज़बरदस्त)

२. ज़ेर - (ِ) छोटी तिरछी लकीर अक्षर के नीचे देने को ज़ेर कहते है (ज़ेरदस्त)

३. पेश - (ُ) पेश का चिन्ह अक्षर के ऊपर होता है

४. मंदु - (~) केवल अलफ के ऊपर आता है

५. निम्न अक्षर मात्राओं भी सहायक है इसलिये बारबार लिखने का अभ्यास करें

नून نـ ن वावु و ये يـ ي अलफ ا

अू	अु	अी	अि	आ	अ	हिजे के अक्षर
اُو	اُ	اِي	اِ	آ	اَ	अलफ
बू	बु	बी	बि	बा	ब	
بُو	بُ	بِي	بِ	با	بَ	बे
ٻُو	ٻُ	ٻِي	ٻِ	ٻا	ٻَ	बे
پُو	پُ	پِي	پِ	پا	پَ	पे
ڀُو	ڀُ	ڀِي	ڀِ	ڀا	ڀَ	भे
تُو	تُ	تِي	تِ	تا	تَ	ते
ڦُو	ڦُ	ڦِي	ڦِ	ڦا	ڦَ	फे

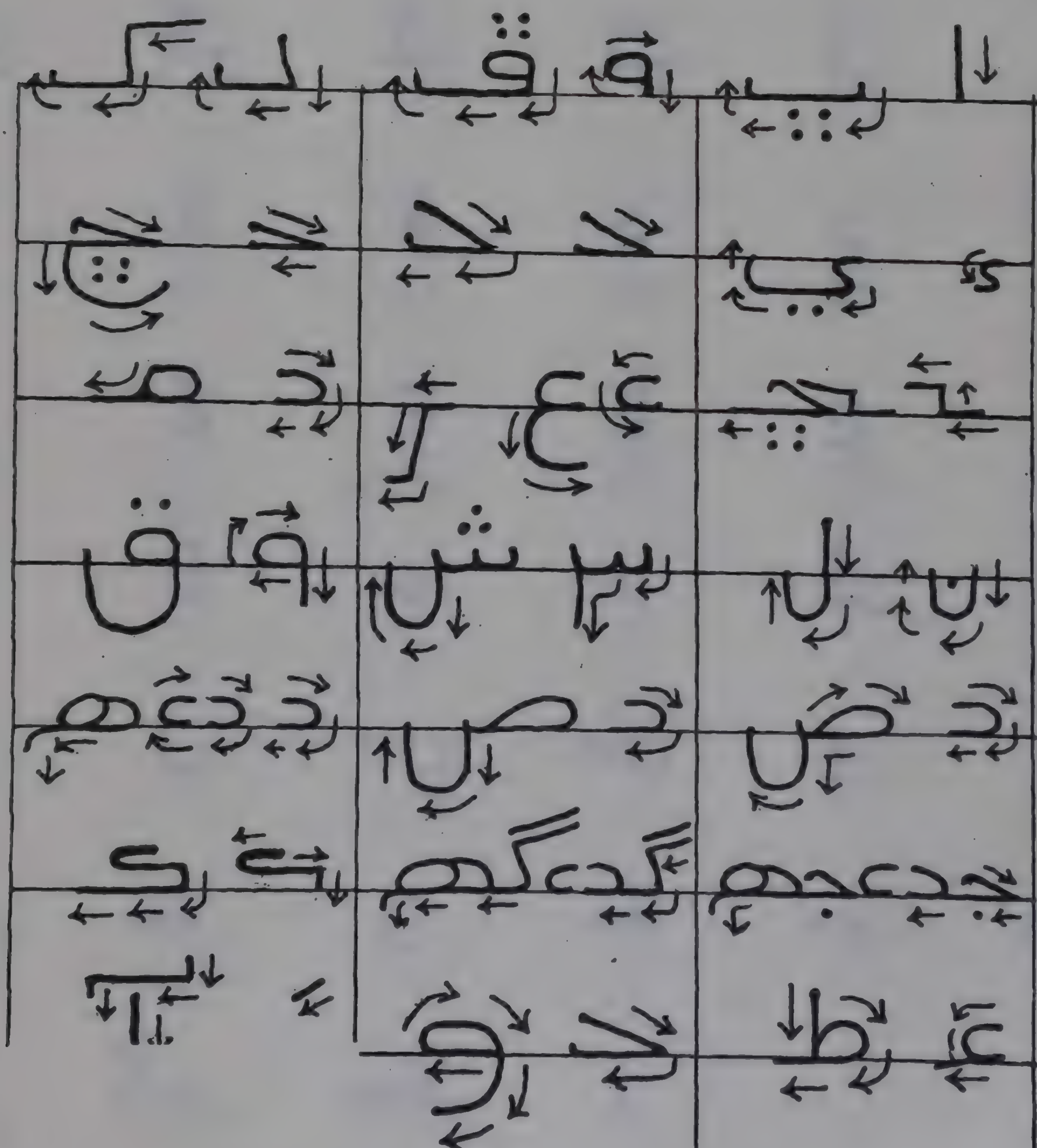
बे की मात्राऐं कंठ करें

१	बे ज़बर	ब	= بَ
	बे अलफ	बा	= با
२	बे ज़ेर	बि	= بِ
	बे ये ज़ेर	बी	= بِي
३	बे पेश	बु	= بُ
	बे वावु पेश	बू	= بُو

अलफ की मात्राऐं कंठ करे

१	अलफ ज़बर	अ	= اَ
	अलफ मंदु	आ	= آ
२	अलफ ज़ेर	अि	= اِ
	अलफ ये ज़ेर	अी	= اِي
३	अलफ पेश	अु	= اُ
	अलफ वावु पेश	अू	= اُو

ڀِتِ	ڇِتِ	تِڏِ	دِلِ	اَکِ
भिति	छिति	तिडि॒	दिलि	अखि
وِمِلا	تِتِرَ	پِپِرَ	کِلِکَ	نَبِضَ
विमिला	तितिर	पिपिर	किलिक	नबिज़
ڳالِهِ	سِڱرَ	صاحِبَ	ظالِمَ	مالِها
ग॒ालिहि	सिङर	साहिब	ज़ालिम	माल्हा



१३. ५२ अक्षरों की मात्राएं हिजे कर के पढ़ें व लिखें ।   سبق - ١٣ الف بي ٥٢ اکرن جا آواز

(१) पाठ-१२ में अलफ, बे मात्राओं के उच्चारने का ढंग दिया गया है । दूसरी मात्राएं भी उस तरह उच्चारनी हैं याने हिजे का अक्षर १२ ही मात्राओं में एक जैसा उच्चारना है जैसे, अलफ, बे, पे, गाफ, दाल, हाए, अैन, ग़ैन, मीम, नून, लाम, सुवाद, ज़ुवाद, तुए, ज़ुए, काफ, हमज़ो।

(२) अलफ, ये, वाव (ا ، ي ، و) अक्षर भी है और मात्रा बनाने में सहायक भी हैं इसलिए इन अक्षरों का प्रयोग अधिक होता हैं ।

(३) नून = ن ـں, अक्षर भी हैं और नाक के स्वर के लिये भी प्रयोग में आता है इसे नून गुन्ना कहते हैं इसमें नून गुन्ने को मात्रा नहीं दी जाती है. इस नून अक्षर का भी प्रयोग अधिक होता है ।

(४) अलफ + अलफ = अलफ मंद आ = آ = ا + ا
मंद (~) का चिन्ह केवल अलफ के ऊपर आता है।

(५) ज़बर (ـَ), ज़ेर (ـِ) और पेश (ـُ) के चिन्ह अक्षर उच्चारने के बाद उच्चारे जाते हैं । ये मुख्य अक्षर को देते हैं ।

(६) अलफ़, दाल, रे, वाव (ا ، د ، ر ، و)
प्रकार के अक्षर बायें तरफ से अलग हो जाते हैं इस प्रकार की मात्राएं, इस पाठ में ध्यान से देखे ।

(७) मात्राओं का बार बार अभ्यास करें । पहले हिजे करें, बाद में सीधा पढ़े व लिखें।

पाठ - १२ मात्राऐं

سبق - ١٢ الف بي جا آواز

हिजे/उच्चारण करने का ढंग नीचे दिया गया है इस प्रकार हिजे कर के कंठ करें

६		५		४		३		२		१		उच्चारण
आं	अं	औ	ओ	अै	अे	अू	अु	अी	अि	आ	अ	अक्षर
آن	اَن	اَو	او	اَي	اي	اُو	اُ	اِي	اِ	آ	اَ	अलफ
बां	बं	बौ	बो	बै	बे	बू	बु	बी	बि	बा	ब	
بان	بَن	بَو	بو	بَي	بي	بُو	بُ	بِي	بِ	با	بَ	बे

मात्राऐं हिजे/उचचरण करने का तरीका

बे की मात्राऐं कंठ करें

१	बे ज़बर ब	=	بَ
	बे अलफ बा	=	با
२	बे ज़ेर बि	=	بِ
	बे ये ज़ेर बी	=	بِي
३	बे पेश बु	=	بُ
	बे वावु पेश बू	=	بُو
४	बे ये बे	=	بي
	बे ये ज़बर बै	=	بَي
५	बे वावु बो	=	بو
	बे वावु ज़बर बौ	=	بَو
६	बे नून ज़बर बं	=	بَن
	बे अलफ नून बां	=	بان

अलफ की मात्राऐं कंठ करे

१	अलफ ज़बर अ	=	اَ
	अलफ मंदु आ	=	آ
२	अलफ ज़ेर अि	=	اِ
	अलफ ये ज़ेर अी	=	اِي
३	अलफ पेश अु	=	اُ
	अलफ वावु पेश अू	=	اُو
४	अलफ ये अे	=	اي
	अलफ ये ज़बर अै	=	اَي
५	अलफ वावु ओ	=	او
	अलफ वावु ज़बर औ	=	اَو
६	अलफ नून ज़बर अं	=	اَن
	अलफ मंदु नून आं	=	آن

हिजे काअक्षर	ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठां
ठे	ٺَ	ٺا	ٺِ	ٺِي	ٺُ	ٺُو	ٺي	ٺَي	ٺو	ٺَو	ٺَں	ٺاں
टे.	ٽَ	ٽا	ٽِ	ٽِي	ٽُ	ٽُو	ٽي	ٽَي	ٽو	ٽَو	ٽَں	ٽاں
से स-सवाबु	ثَ	ثا	ثِ	ثِي	ثُ	ثُو	ثي	ثَي	ثو	ثَو	ثَں	ثاں
थे	ٿَ	ٿا	ٿِ	ٿِي	ٿُ	ٿُو	ٿي	ٿَي	ٿو	ٿَو	ٿَں	ٿاں
फ़े	فَ	فا	فِ	فِي	فُ	فُو	في	فَي	فو	فَو	فَں	فاں
फे	ڦَ	ڦا	ڦِ	ڦِي	ڦُ	ڦُو	ڦي	ڦَي	ڦو	ڦَو	ڦَں	ڦاں
गाफ	گَ	گا	گِ	گِي	گُ	گُو	گي	گَي	گو	گَو	گَں	گاں
गे	ڳَ	ڳا	ڳِ	ڳِي	ڳُ	ڳُو	ڳي	ڳَي	ڳو	ڳَو	ڳَں	ڳاں
ङे	ڱَ	ڱا	ڱِ	ڱِي	ڱُ	ڱُو	ڱي	ڱَي	ڱو	ڱَو	ڱَں	ڱاں

आं آن	अं اَن	औ اَو	ओ او	ऐ اَي	ए اي	ऊ اُو	उ اُ	ई اِي	इ اِ	आ آ	अ اَ	हिजे काअक्षर अलफ
बां بان	बं بَن	बौ بَو	बो بو	बै بَي	बे بي	बू بُو	बु بُ	बी بِي	बि بِ	बा با	ब بَ	बे
ٻان	ٻَن	ٻَو	ٻو	ٻَي	ٻي	ٻُو	ٻُ	ٻِي	ٻِ	ٻا	ٻَ	बे
پان	پَن	پَو	پو	پَي	پي	پُو	پُ	پِي	پِ	پا	پَ	पे
ڀان	ڀَن	ڀَو	ڀو	ڀَي	ڀي	ڀُو	ڀُ	ڀِي	ڀِ	ڀا	ڀَ	भे
تان	تَن	تَو	تو	تَي	تي	تُو	تُ	تِي	تِ	تا	تَ	ते

हिजे काअक्षर	ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढां
ढाल	ڍَ	ڍا	ڍِ	ڍِي	ڍُ	ڍُو	ڍي	ڍَي	ڍو	ڍَو	ڍَں	ڍاں
हाए हजम	حَ	حا	حِ	حِي	حُ	حُو	حي	حَي	حو	حَو	حَں	حاں
जीम	جَ	جا	جِ	جِي	جُ	جُو	جي	جَي	جو	جَو	جَں	جاں
ज़े	ڄَ	ڄا	ڄِ	ڄِي	ڄُ	ڄُو	ڄي	ڄَي	ڄو	ڄَو	ڄَں	ڄاں
ञे	ڃَ	ڃا	ڃِ	ڃِي	ڃُ	ڃُو	ڃي	ڃَي	ڃو	ڃَو	ڃَں	ڃاں
चे	چَ	چا	چِ	چِي	چُ	چُو	چي	چَي	چو	چَو	چَں	چاں
छे	ڇَ	ڇا	ڇِ	ڇِي	ڇُ	ڇُو	ڇي	ڇَي	ڇو	ڇَو	ڇَں	ڇاں
ख़ाए	خَ	خا	خِ	خِي	خُ	خُو	خي	خَي	خو	خَو	خَں	خاں

हिजे काअक्षर	ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खां
खे	کَ	کا	کِ	کِي	کُ	کُو	کي	کَي	کو	کَو	کَں	کاں
ये	يَ	يا	يِ	يِي	يُ	يُو	يي	يَي	يو	يَو	يَں	ياں
दाल	دَ	دا	دِ	دِي	دُ	دُو	دي	دَي	دو	دَو	دَں	داں
ज़ाल	ذَ	ذا	ذِ	ذِي	ذُ	ذُو	ذي	ذَي	ذو	ذَو	ذَں	ذاں
धाल	ڌَ	ڌا	ڌِ	ڌِي	ڌُ	ڌُو	ڌي	ڌَي	ڌو	ڌَو	ڌَں	ڌاں
<u>दा</u>ल	ڏَ	ڏا	ڏِ	ڏِي	ڏُ	ڏُو	ڏي	ڏَي	ڏو	ڏَو	ڏَں	ڏاں
डाल	ڊَ	ڊا	ڊِ	ڊِي	ڊُ	ڊُو	ڊي	ڊَي	ڊو	ڊَو	ڊَں	ڊاں

हिजेका अक्षर	ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लां
लाम	لَ	لا	لِ	لِي	لُ	لُو	لي	لَي	لو	لَو	لَن	لان
सीन	سَ	سا	سِ	سِي	سُ	سُو	سي	سَي	سو	سَو	سَن	سان
शीन	شَ	شا	شِ	شِي	شُ	شُو	شي	شَي	شو	شَو	شَن	شان
वाव	وَ	وا	وِ	وِي	وُ	وُو	وي	وَي	وو	وَو	وَن	وان
क़ाफ	قَ	قا	قِ	قِي	قُ	قُو	قي	قَي	قو	قَو	قَن	قان
सुवाद	صَ	صا	صِ	صِي	صُ	صُو	صي	صَي	صو	صَو	صَن	صان
जुवाद	ضَ	ضا	ضِ	ضِي	ضُ	ضُو	ضي	ضَي	ضو	ضَو	ضَن	ضان
णे/णूणु	ڻَ	ڻا	ڻِ	ڻِي	ڻُ	ڻُو	ڻي	ڻَي	ڻو	ڻَو	ڻَن	ڻان

हिजे काअक्षर	अ	आ	अि	अी	अु	अू	अे	अै	ओ	औ	अं	आं
अैन	عَ	عا	عِ	عِي	عُ	عُو	عي	عَي	عو	عَو	عَں	عاں
ग़ैन	غَ	غا	غِ	غِي	غُ	غُو	غي	غَي	غو	غَو	غَں	غاں
रे	رَ	را	رِ	رِي	رُ	رُو	ري	رَي	رو	رَو	رَں	راں
ज़्रे	زَ	زا	زِ	زِي	زُ	زُو	زي	زَي	زو	زَو	زَں	زاں
ड़े	ڑَ	ڑا	ڑِ	ڑِي	ڑُ	ڑُو	ڑي	ڑَي	ڑو	ڑَو	ڑَں	ڑاں
मीम	مَ	ما	مِ	مِي	مُ	مُو	مي	مَي	مو	مَو	مَں	ماں
नून	نَ	نا	نِ	نِي	نُ	نُو	ني	نَي	نو	نَو	نَں	ناں

سبق - ۱۴ سِنڌيِ ڊڪشنريءِ جي سِلسِلي موُجِب اَکر

ا ب ٻ ڀ ت ٿ ٽ

ٺ ث پ ڦ ج ڄ جھ

ڃ چ ڇ ح خ د ڌ

ڏ ڊ ڍ ذ ر ڙ ز

س ش ص ض ط ظ ع

غ ف ق ڪ ک گ ڳ

گھ ڱ ل م ن ڻ و

ھ ء ي

हिजे काअक्षर	त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तां
तुअे त-तोतो	طَ	طا	طِ	طِي	طُ	طُو	طي	طَي	طو	طَو	طَں	طاں
ज़ुअे ज़ालिम	ظَ	ظا	ظِ	ظِي	ظُ	ظُو	ظي	ظَي	ظو	ظَو	ظَں	ظاں
हे	ھَ	ھا	ھِ	ھِي	ھُ	ھُو	ھي	ھَي	ھو	ھَو	ھَں	ھاں
झे	جھَ	جھا	جھِ	جھِي	جھُ	جھُو	جھي	جھَي	جھو	جھَو	جھَں	جھاں
घे	گھَ	گھا	گھِ	گھِي	گھُ	گھُو	گھي	گھَي	گھو	گھَو	گھَں	گھاں
काफ़	کَ	کا	کِ	کِي	کُ	کُو	کي	کَي	کو	کَو	کَں	کاں
हमज़ो	अ ءَ	आ ئا	ءِ	ئِي	ءُ	ئُو	ئي	ئَي	ئو	ئَو	ئَں	ئاں
ढ़े	ڙھَ	ڙھا	ڙھِ	ڙھِي	ڙھُ	ڙھُو	ڙھي	ڙھَي	ڙھو	ڙھَو	ڙھَں	ڙھاں

سبق - ١٦ ماترائن جو اڀياس

ऐ ए ई
اِي، اي ۽ اَي

اِبسَ پاپِي دادِي ماسِي سِيٽي تِيلِي
گاڏِي شِيدِي. ميٺُ پيرُ ديگِ ريلَ
تيلُ ڪيلُ سيجَ چيچَ ڏيڏُرُ ڊيلَ
ناريلُ ويلڻُ. اَيتُ حَيوانُ مَيدانُ سَيِنڪُ
عَينڪَ بَيتَ خَيراتِ هيبَ خَيرُ عَيبُ

اُو او اَو ۽ اَن ماترائن جو اڀياس

अं औ ओ ऊ

مُوري چُوڙو لُومڙُ صُوفُ بُوٽُ سُوٽُ
ڳُوڻ لُوڻُ ڪارو اَچو نورُ گھوڙو
طوطو ٻِلو سائو ڪوڪو اَوڪو مَوجَ
قَولُ حَوضُ عَورَتَ هوڙَ سَوڪو شَوقُ
اَنبُ وَنگِي سِنڌُ ڪانءُ ڪَنڌُ چَنڊُ
ڏَندُ مَندَرُ گھِنڊُ جھنڊو ڏنڊو

تُوري تُوري وَٽُ. قَولَ تي قائِمُ رَههُ.
ٻَڪِري ڳانءِ مِينهن کيرُ ڏِيندِي آهي.
اَنڌَنِ مَندَنِ تي دَيا ڪَجي. سَنتَنِ جو سَنگُ ڪَرِ.

سبق - ۱۵ ماترائُن جو اڀياس

اُٺُ اُٿُ پُٽُ ڏُڏُ

گُلُ بُکُ رُلُ پُڇُ باغُ

لَداخُ آوازُ ثوابُ لَغَزُ مُتِکُ

ڪاغَذُ ظالِمُ ضامِنُ قَلَمُ ظُلِمُ

حِرِصُ گُڏا ڪاٺُ غَمُ ڍِڳُهه

تازا ڦَلَ کاءِ. اَڇا ٻَگهه ڏِسُ.

ڪَمَلَ گُلُ کَڻُ. رامَ بالُ رَکُ.

راجَنَ واڱڻَ وَٺُ. ڪَمِلا اَکِ پَٽِ.

راڌا راڳُ ڳاءِ. ظُلِمُ نہ ڪَرِ.

جهامَنَ جهٽ پَٽِ بَصَرَ وَڍِ. گهَرِ وَڃُ.

چِپَ نہ ڪَڍُ. ڍُهِلُ وَڄاءِ.

سبق - ١٨ ماتِرائوُن سُڃاڻو. هِجي ڪري ۽ پوءِ بِنا هِجي ٻڌايو.

اِ اَي اِيِ اَو اُو او آ

ٻي ٻو ٻَي ٻوَ ٻوُ ٻَن ٻان

ٿَ ٿِ ٿيَ ٿيِ ٿَو ٿوُ ٿو

ڦيِ ڦُ ڦَو ڦو ڦوُ ڦَن ڦان

ڏِ ڏيِ ڏيَ ڏي ڏوَ ڏوُ ڏنَ

ڍُ ڍوُ ڍو ڍَو ڍيِ ڍَن ڍان

حِ حَو حي حَي حيِ حوُ حَن

ڇُ ڇوُ ڇوَ ڇيِ ڇِ ڇَن ڇو

خَ خُ خيِ خيَ خوَ خوُ خان

غا غُ غي غيِ غوُ غَو غو

يَ ييِ يُ يوُ يي يِ يَن

ڙا ڙَي ڙيِ ڙِ ڙُ ڙَو ڙوُ

سبق - ١٧ ماتراڻن جو اڀياس

ڳاڏي آئي. سيٺي وڃي. ڳاڏي هلي.

اَڄُ فَقِير ماني کاڌي. هِنَ نيري شيشي ورتي.

نيرجَ ڳُلابَ جا ڳُلَ ڏِسُ.

ڳُلَ نَہ ڇِنُ. ضِدُ نَہ ڪَرِ. سُٺي عادَتَ سِکُہ.

بازار هَلُ. يَڪِدَمُ تِيارُ ٿيءُ.

چيخَ مَڇِي بيمارُ لَذيذُ دَرزي تَصويرَ

قِيٿو گودِ صوفُ شُغُلُ مَضمونُ صَندوقَ

شروع خوشُ سُٺو طوطو چوڪِرو ڇَڱو

تَختو ڇِمِڇو پِڃِرو نوڪَرُ نوريئَڙو زَنجيرَ

ڏَندَ ڪُنڊَ پَنڌُ نيسارو ناريلُ رَميشُ

ميرو ڏَڳو واڍو سُڄو چارو ڄَمُون

سبق - ١٩ نوٌنُ گُنو - نَڪ وارا آواز

जिस अक्षर का उचार मुख व नाक से निकलता है उस अक्षर में नून =ن / ڻ जोड़ते हैं इसे नून गुन्ना कहते है । हिन्दी में अक्षर के ऊपर बिंदी देते है सिंधी में अक्षर में नून जोड़ते है। नून गुन्ने को कोई मात्रा नहीं दी जाती है । कभी नून के ऊपर चिन्ह (^) देते है जैसे نْ / ڻْ

अक्षर अ = اَ आ = آ अि = اِ अी = اِي उ = اُ अू= اُو

अं = اَن आं = آن अिं= اِن अीं = اِين उं = اُن ऊं= اُون

	अं	आं	अिं	अीं	अुं	अूं	अें	अैं	अों	अौं
ا	اَن	آن	اِن	اِين	اُن	اُون	اين	اَين	اون	اَون
	बं	बां	बि	बीं	बु	बू	बें	बैं	बों	बौं
ب	بَن	بان	بِن	بِين	بُن	بُون	بين	بَين	بون	بَون
ٻ	ٻَن	ٻان	ٻِن	ٻِين	ٻُن	ٻُون	ٻين	ٻَين	ٻون	ٻَون
ٿ	ٿَن	ٿان	ٿِن	ٿِين	ٿُن	ٿُون	ٿين	ٿَين	ٿون	ٿَون
ڦ	ڦَن	ڦان	ڦِن	ڦِين	ڦُن	ڦُون	ڦين	ڦَين	ڦون	ڦَون
ڳ	ڳَن	ڳان	ڳِن	ڳِين	ڳُن	ڳُون	ڳين	ڳَين	ڳون	ڳَون
ي	يَن	يان	يِن	يِين	يُن	يُون	يين	يَين	يون	يَون
ڏ	ڏَن	ڏان	ڏَن	ڏِين	ڏُن	ڏُون	ڏين	ڏَين	ڏون	ڏَون
ڊ	ڊَن	ڊان	ڊَن	ڊِين	ڊُن	ڊُون	ڊين	ڊَين	ڊون	ڊَون
چ	چَن	چان	چَن	چِين	چُن	چُون	چين	چَين	چون	چَون
غ	غَن	غان	غِن	غِين	غُن	غُون	غين	غَين	غون	غَون
ز	زَن	زان	زِن	زِين	زُن	زُون	زين	زَين	زون	زَون
جھ	جھَن	جھان	جھِن	جھِين	جھُن	جھُون	جھين	جھَين	جھون	جھَون
گھ	گھَن	گھان	گھِن	گھِين	گھُن	گھُون	گھين	گھَين	گھون	گھَون

हिजे करके पढने की ज़रुरत नही है पर हिजे/उच्चारण आना चाहिये, अक्षर पहले पढे जाते हैं ज़बर ज़ेर पेश बाद में उचारा जाता है जैसे बीं=بِين (बे ये नून ज़ेर बीं). बूं =بُون (वाव नून पेश बूं =بُون)

زِ زيِ زا زوُ زَو زو زان

لا لِ ليِ لوُ لُ لَو لان

وِ ويِ وَي ووُ وَو وو وَن

قَ قَو قوُ قَي قيِ قي قان

ضِ ضُ ضيِ ضوُ ضَي ضَو ضَن

ظا ظَي ظُ ظَو ظوُ ظيِ ظان

جَھ جِھ جھيِ جُھو جُھ جَھن جھي

گھيِ گُھ گِھ گھي گھو گُھو گَھان

ءَ ئا ئَو ئُو ئو ئان ئَن

ذَن ذا ذيِ ذِ ذوُ ذُ ذَو

سُ سِ سيِ سَو سُو سان سَن

شيِ شُ شَو شوُ شو شَن شيَ

ڙھا ڙِھ ڙَھي ڙھيِ ڙھو ڙھان ڙھَن

سبق - ٢١ سنڌين جا گڻ

سِنڌِيُن ۾ اَنيڪ گُڻَ آهِنِ. دَيا، ڌَرمُ، مَحَنَتَ، مانَوَتا، مَهمانُ نِوازِيِ، هر سِنڌيِ ٻَچي ۾ پَرِبَل آهي. اِن سَبَبُ ئيِ تہ اَڄُ سِنڌِيُن هرَ هنڌِ موَج مَچائيِ آهي.

سِنڌيِ پائُرو، اَڄُ وَچَنُ ڪَرِيو تہ اَسين ماتِرڀوُميِ سِنڌُ کي نہ وِسارِينداسِين. ماترڀاشا سِنڌيءَ کي نہ وِسارِينداسِين هِڪَ ٻِئي جيِ عِزَتَ پَنهِنجيِ عِزِتَ سُمجهنَداسِين. اَولادَ ۾ اِهو اَثَرُ وِجهنداسِين. تَنَ، مَنَ ۽ ڌَنَ جيِ هاجيِ ڪَندَڙ نَشيدار شَيُنِ کان ٻَچَنداسِين.

ڏاڏيِ ڏني فقيِر رام دربار - ايِٽا

پنهنجيِ زِبانَ وَقتُ ڪَڍيِ سِکيِ وَٺِنِ،

اَللهہ کين سَمجهہ اَهڙيِ ڏِئي، سِکيِ وَٺِنِ.

سبق - ٢٠ همت رکو

مُنهِنجا سِنڌي ڀائُرو ۽ ڀينَروُن ! سِنڌي ٻالِڪو ۽ ٻالِڪِيوُن ! اَوهِين ڪَمزورُ ڪينَ آهِيو. اوهان جي اَندرِ لِڪَلَ شَڪِتي آهي. لِڪَلَ شَڪتيِ کولِيو. نَوان ٿِيو ! نَوان ٿِيو ! نَوَ جيِوَنُ ڪيئَن مِلي، اِن لاءِ ٻي ڏَپا ٿِيو، شَڪِتيِوانُ ٿِيو، پرِيوُء ۾ صِدِقُ رَکو. اِهو مُنهِنجو وِشواسُ آهي تہ سِنڌُ پياريِ ۽ ڀارتُ پِيارو اِڪَ ڏِينهُن وَريِ هِڪُ ٿِيندا. ڪيئَن ٿِيندو، موُن کي خَبَر ڪانِهي پَرَ موُن کي صِدِقُ آهي.

تَوهان اَڪيلا ڪينَ آهِيو. پرِيوُ تَوِهان سان هميشَهَ ساٿُ آهي. زِندَگيِءَ کي هِمَتَ سان مُنهنُ ڏيو.

ساڌوُ ٽيِ. ايل. واسواڻيِ

سبق - ٢٣ گيتُ

سنڌي ٻوليءَ سان ڪر پيار، هجي جُوانُ ٻڍو توڙي ٻارُ.

ا - جَنهن ٻوليءَ ۾ ماءُ ڏني لولي، اُهائي آهي مِنڙي ٻولي،
ڏاڍي آهي مَزيدار، سِنڌي ٻوليءَ......

٢ - سَيکو پَنهِنجي ٻولي ڳالهائي، تو ڇڏي آ ڇا ڪان ڀُلائي ؟
پَنهنجي ٻولي سُکن جو سارُ، سِنڌي ٻوليءَ......

٣ - پَکيُن پَسُن پَنهِنجي ٻولي نہ ڦيري، توُن ڇو ٽِئين ٻوليءَ جو ويري
سِنڌي سياڻا ڪر ويچارُ، سِنڌي ٻوليءَ......

سبق - ٢٢ سِنڌي ٻولي (ماستر سُندرداس موُلچنداڻي)

اَسان جي سنڌي ٻولي ٻِيَنِ ٻوليُنِ کان هر حالت ۾ سَوائي آهي. تَنهن هوندي بہ اَسان ٻِيَنَ ٻوليُن ۾ ڳالهائِڻ، لِکڻ ۽ پَڙهڻ ۾ فَخُرُ وَٺون ٿا ! ٻِيَنِ ٻوليُنِ جي جِيتامِڙنِ جا حوالا ڏِيوُن ٿا پر پَنهنجي منڙي ٻوليءَ جي سرمورنِ - شاهہ، سَچل ۽ ساميءَ پارنَ کان اَڻواقُفُ آهيوُن.

پَر اَسان سِنڌيُنِ مان ڪي اَهڙا خَفتيِ حَيات آهنِ جِن کي وِشواس آهي تہ سِنڌيءَ ۾ نئون رُوحُ ڦوڪي سَگهجي ٿو - ماستر سُندرداس موُلچنداڻي اُنهن خَفِتيُن مان هِڪُ آهي.

-- جيوت چاوِلا

سبق - ٢٢ سِنڌ ۽ سِنڌي ٻولي

١ - خاص ڪَتوُري پانيان وَطَنَ جيِ واريِ،
مِٺيِ مِٺڙي مُلڪَ جيِ مُشڪان موچاريِ.
پَنهِنجي دِلبَرَ ديسَ جيِ پَٽيِ پِڻِ پياريِ،
گاهُ ٻہ گُلزاريِ، ٻُٽِ باغيچو پانيان.

-- ڪشِنچند ''بيوسِ''

٢ - بَيتُ لِکان تہ اَچيو وَڃي مِٺيِ ۽ سِنڌ جو ڏيانُ،
مِٺو پوُرُ آ مُلڪَ جو ڪَوِتا ڪان ٻہ مَهانُ.

٣ - سِنڌُ وَئيِ صَدما رَسِيا، دِلِ ٻہ تہ نِراس ناهہ،
سَڪَر ڪراچِيوُن اَڏَڻَ جيِ عادَتَ اَڃان ٻہِ آهہِ.

-- اِندر ڀوڄواڻي

٤ - سِنڌي سِنڌيِ مان ڪَرِيان جو سِنڌيِ ٻولِيان ٻول،
مُنهنجي ٻوليِ ۽ جا اَکَر عُمدا ۽ اَنمول،
شاعر پِريِن جهولَ اَکَرَنَ جي اَنبار مان.

-- لکميچند ''پريم''

٥ - اَسان لاءِ ويدَ واڻيِ آهہِ سِنڌيِ، سِنڌُ تيِرِٿُ آ،
خَزانو بي بها آهي مَٿي تَنهِن ڪوُن نہ بيِ وِٿُ آ.

-- هريِ ''دلگيِر''

سبق - ٢٥ سنڌيِ قوميِ ترانو

آنڌيءَ ۾ جوت جڳائڻ وارا سِنڌيِ.

مِٽيءِ کي سونُ بڻائڻ وارا سِنڌيِ.

١ - شاهه، سَچل، ساميءَ جي ورثي وارا،

نَس نَس ۾ جنجي وَهي ٿيِ سِنڌو ڌارا.

ٿيِ رَهنِ مليرِ ۾ مارُوئڙا،

جهر ۽ جهنگل ۾ جهانگيئڙا

بَرپٽ ۾ باغ لڳائڻ وارا سِنڌيِ.

٢ - موهن جي دَڙي جِيان ڏِبجيِ اوُچا رَهندا،

طوُفان، زِلزِلا، سوُر ۽ سَختيوُن سَهندا،

هيموُنءَ جِيان ڦاسيِ کائِيندا،

تہ بہ مُرڪيِ ڳائِيندا،

هيِ ڪُڏَندي ڪَنڌُ ڪَپائڻ وارا سِنڌيِ.

-- موتيِ پرڪاش

(اکل ڀارت سنڌيِ ٻولي ۽ ساهت سڀا طرفان مقرر ڪيل)

سبق - ٢٤ بَيتُ

مِٺڙِي اَباڻِي ٻولِي، سِنڌِي اَباڻِي ٻولِي،
تَنهِن کي مان ڪيئَن وِسارِيان
جِندُ جانِ تنهن تان وارِيان
جَنهِن ۾ ڏِنِي آ مُونکي پِينگهي ۾ ماءُ لولِي.

٢ - سامِيءَ ۽ شاهه جَهِڙا جَنهن جا سَپُوت آهِنِ،
سَنتَنِ جِي هيِ سَدورِي آهي عاشِقَنِ جِي ٻولِي.

٣ - هر قومَ جِي سُڃاڻپ اُن جِي زِبانَ آهي،
زِندَهه تُون سِنڌِي آهِين، زِندهه جي تُنهِجِي ٻولِي.

٤ - سڀ ڪُجهُ ڇَڏي تُون آئين پنهنجي وَطَنَ جي خاطر،
ليڪِنِ تو ساٿ آندي پَنهِنجِي اَباڻِي ٻولِي.

٥ - دُنيا جي هر حِصي ۾ تُنهِنجو وَجُود آهي،
جِتِ ٻِيِ وَسِين تُون سِنڌِي، تو ساٿ پنهنجي ٻولِي.

١ کان ١٠٠ تائين اکرن ۾ انگ

١ هِڪُ	٢١ ايڪِويهَ	٤١ ايڪيتاليهَ	٦١ ايڪَهٺِ	٨١ ايڪاسي
٢ ٻَہ	٢٢ ٻاوِيهَ	٤٢ ٻائيتاليهَ	٦٢ ٻاهٺِ	٨٢ ٻِياسي
٣ ٽي	٢٣ ٽيوِيهَ	٤٣ ٽيتاليهَ	٦٣ ٽيهٺِ	٨٣ ٽِياسي
٤ چارِ	٢٤ چووِيهَ	٤٤ چوئيتاليهَ	٦٤ چوهٺِ	٨٤ چوراسي
٥ پَنج	٢٥ پَنجويهَ	٤٥ پَنجيتاليهَ	٦٥ پَنجَهٺِ	٨٥ پَنجاسي
٦ ڇَهَ	٢٦ ڇَوِيهَ	٤٦ ڇائيتاليهَ	٦٦ ڇاهٺِ	٨٦ ڇَهاسي
٧ سَتَ	٢٧ سَتاوِيهَ	٤٧ سَتيتاليهَ	٦٧ سَتَهٺِ	٨٧ سَتاسي
٨ اَٺَ	٢٨ اَٺاوِيهَ	٤٨ اَٺيتاليهَ	٦٨ اَٺَهٺِ	٨٨ اَٺاسي
٩ نَوَ	٢٩ اُڻٽِيهَ	٤٩ اُڻوَنجاهُ	٦٩ اُڻهتَرِ	٨٩ اُڻانوي
١٠ ڏَهَ	٣٠ ٽِيهَ	٥٠ پَنجاهُ	٧٠ سَترِ	٩٠ نَوي
١١ يارهن	٣١ ايڪَٽِيهَ	٥١ ايڪِوَنجاهُ	٧١ ايڪَهتَرِ	٩١ ايڪانَوي
١٢ ٻارهن	٣٢ ٻَٽِيهَ	٥٢ ٻاوَنجاهُ	٧٢ ٻاهتَرِ	٩٢ ٻِيانَوي
١٣ تيرهن	٣٣ ٽيٽِيهَ	٥٣ ٽيوَنجاهُ	٧٣ ٽيهتَرِ	٩٣ ٽِيانَوي
١٤ چوڏهن	٣٤ چوٽِيهَ	٥٤ چووَنجاهُ	٧٤ چوَهتَرِ	٩٤ چورانَوي
١٥ پندرهن	٣٥ پَنجِٽِيهَ	٥٥ پَنجوَنجاهُ	٧٥ پَنجَهتَرِ	٩٥ پَنجانَوي
١٦ سورِهن	٣٦ ڇَٽِيهَ	٥٦ ڇاوَنجاهُ	٧٦ ڇاهتَرِ	٩٦ ڇَهانَوي
١٧ سَترَهن	٣٧ سَتُٽِيهَ	٥٧ سَتوَنجاهُ	٧٧ سَتهتَر	٩٧ سَتانَوي
١٨ اَرڙهن	٣٨ اَٺَٽِيهَ	٥٨ اَٺوَنجاهُ	٧٨ اَٺهتَرِ	٩٨ اَٺانَوي
١٩ اُڻويهه	٣٩ اُڻيتاليهَ	٥٩ اُڻهٺِ	٧٩ اُڻِياسي	٩٩ نوانوي
٢٠ وِيهَ	٤٠ چاليهَ	٦٠ سَٺِ	٨٠ اَسي	١٠٠ سؤ

سبق - ٢٦ پرتگيا پترُ

١ - مان سنڌي آهيان. سنڌي هئڻ تي مونکي فخرُ آهي. مان گهر ۾ پنهنجي ڪٽنب سان ۽ ٻاهر مترن سان سنڌيءَ ۾ ڳالهائيندُس، سنڌي سنتن ۽ ساهتڪارن جا سنڌي ڪتاب پڙهندُس.

(اکل ڀارت سنڌي ٻولي ۽ پرچار سڀا)

٢ - جي ڄاڻين تہ ٻہ نہ ڄاڻ، اِي دَرُ اَٻوجهن جو.
هن دَرسي ئي اَگهيا، جن نہ ڀانيو ڀاڻُ،
ريجهائو راڄاڻُ، آهي اَٻوجَهن جو.

(شاهہ عبداللطيف)

٣ - هي ڀڳوانَ ! اسان سڀني کي سُٻُڌي ڏي، شَڪتي ڏي،
نِروگِتا ڏي تہ پنهنجو پنهنجو ڪرتويہ پالي سُکي رهُون.

(سوامي ليلاشاهہ)

ڏکين لفظن جي معنيٰ

حج - تيرٿ، ياترا، زيارت
قار - ڦاڪ (انب جي ڦاڪ)
ثوابُ - ڀلائيءَ جو ڪم
حِرص - خواهش، تمنا، چاهه
چيچ - نچڻ، ڏونگڻ سان نچڻ
خيراتِ - دانُ
حَوضُ - پاڻيءَ جي ٽانڪي
شُغلُ - موج، آنند، وندر، خوشي
صدق - وشواس، شرڌا، ڀروَسو
هاڃي - نُقصانُ
ڪٿوري - سڳنڌي پدارٿ
مُشڪ - سڳنڌي پدارٿ
موچاري - بهتر، سٺي
پٽي - مِٽي
دلبر - پيارو
گلزاري - وڻندڙ، گلن سان ڀريل
ٻَڻ - رڻ پٽ، بيابان
پوُر - ويچار، خيال
صدما - ڏک
رسيو - پهتو، مليو
عمدا - سهڻا، وڻندڙ

انمول - قيمتي
انبار - ڍِڳ، جام، گهڻا
بي بها - قيمتي
وِٿُ - شيءَ، پدارٿ
سوائي - وڌيڪ
جيِتامڙن - ننڍڙن
سرمور - وڏا، اُوچ، مکيه
روح ڦوڪڻ - اُتساهه ڀرڻ
خفتي - شائق، چاهڪ، جنوني
مارُوئڙا - ڳوٺاڻا، پيارا ساٿي
جهانگيئڙا - ڳوٺاڻا، جهنگل جا سادا ماڻهو
آنڌي - طوفان، تيز هوا
ابوجهه - سادا سِڌا ماڻهو
اگهيا - قبول پيا، منظور ٿيا
پاڻُ - اهنڪار ايمان
ريجهاڻو - راضي ٿيو
راڄاڻ - ايشور، پريو
سُڀُڌي - سُمت، سني سمجهه
نروڳتا - سٺي صحت
ڪرتوَيه - فرض، جوابداري

واقفيت

جنم - ٢١ جون ١٩٢٧ع دادو (سنڌ)



شري چيلارام ڪياڻي هتان جي اهم اداري ڪنڊلا پورٽ ٽرسٽ مان سن ١٩٩٥ع ۾ ايگزيڪيوٽو انجنير جي عهدي تان رٽاير ٿيو. نوڪريءَ مان فارغ ٿيڻ بعد هن نون دنيوي جهنجهٽن کان پاڻ کي پري رکي، سنڌي سيکارڻ خواهه سنڌي سيکارڻ جي مرڪزن کولڻ جو مهان ڪاريه پاڻ تي هموار ڪيو ان وشواس ڪارڻ ته اڄ جي حالتن هيٺ صرف ٻوليِ ئي جاتيءَ جي الڳه هستيءَ کي محفوظ رکي سگهي ٿي، ورنه عرصي بعد ان جو نالو فقط اتهاس جي پراڻن پنن تائين رهجي ويندو. سنڌي ٻولي ڀلي اسانکي دال-روٽي مهيا ڪرڻ جو ساڌن نه هجي، پر اسانکي خصوصي وجود جو واحد وسيلو ته اوس آهي ۽ ان لحاظ کان ان جي اول ترين اهميت برقرار آهي. 'سنڌي ادبي سرڪل' جي ١٩٩٦ع ۾ استاپنا کان اڳه ئي شري چيلارام ڪياڻي سنڌي ڪلاس هلائيندو هو پر ان بعد اهو ڪم سرڪل جي زيرسايي آندو ويو چاڪاڻ ته هو پاڻ سرڪل جي پايو وجهندڙ ميمبرن مان هڪ آهي ۽ سرڪل جي هرڪاريه ۾ سرگرم ڀرو وٺندڙ آهي.

سالن لاڳر سنڌي سيکارڻ ۽ سکڻ جي تڪليفن جو جيڪو آزمودو شري چيلارام کي مليو، ان جي مدنظر هن سن ١٩٩٥ع ۾ سنڌي سکڻ جو سولو ڪتاب لکي پڌرو ڪرايو، ٻيو ڇاپو ١٩٩٦ع ۾، ٽيون ڇاپو ١٩٩٦ع ۾ ۽ هي چوٿون سڌاريل ڇاپو هاڻ (١٩٩٨ع) اوهانجي هٿن ۾ آهي. چوٿين ڇاپي ۾ ڪوشش ڪيل آهي ته جيئن بالغ وديارٿي، استاد جي مدد ڪانسواءِ به گهر ويٺي سنڌي سکي سگهي ڇاڪاڻ ته اڄڪلهه ڪيترا شخص سنڌي سکڻ جا خواهان آهن مگر ڪين نوڪرين جي مشغولين ڪري يا گهڻي فاصلي ڪري ڪنهن مقرر ڪيل وقت تي ڪلاس ۾ پهچڻ دشوار ٿو ٿي پوي. هن ڪتاب جي اڳين ٽن ڇاپن جو مڪمل طور خلاص ٿيڻ اهو ثابت ٿو ڪري ته ڪتاب سنڌي عوام ۾ چڱي مقبوليت حاصل ڪئي آهي.

سنڌي سيکارڻ جي ڪاريه ۾ اتساهه، ايڪاگرتا ۽ اورچائي جي جيڪا پريچيه شري چيلارام ڏني آهي، اها اڄ جي سنڌي جڳت ۾ تمام ٿورن انسانن وٽ موجود ٿي ڏسجي. سندس ڪاريه جي قدرشناسيءَ طور ١٩٩٧ع ۾ شري چيلارام کي ''نئين دنيا پبليڪيشن'' جي انعام سان نوازيو ويو هو.

مونکي يقين آهي ته هي ڪتاب سنڌي سکندڙن خواهه سيکاريندڙن لاءِ ڪارگر ثابت ٿيندو ۽ ٻوليءَ جي بهبوديءَ، واڌاري ۽ ڦهلاو لاءِ سني سهايڪ جو رول ادا ڪندو.

پروفيسر آسن واسواڻي 'مجبور'
ڪنوينر، سنڌي ادبي سرڪل، گانڌيڌام - آديپور

٢ نومبر، ١٩٩٨